ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 12 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 199 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 16 जनवरी, 2023 से रविवार 22 जनवरी, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2079 | सृष्टि सम्वत् 1960853123
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयंती: दो वर्षीय आयोजन

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी करेंगे 12 फरवरी को शुभारंभ

तैयारियों हेतु आर्य समाजों के विभिन्न संगठनों की बैठक सम्पन्न

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की सफलता का इतिहास दोहराएगा आर्य समाज -सुरेश चन्द्र आर्य

महर्षि की 200 वीं जयंती के आयोजनों को सफल बनाना हम सबकी जिम्मेदारी -सुरेन्द्र कुमार आर्य

युवाओं की भागीदारी इस अवसर को बनएगी विलक्षण -किरण चोपड़ा

महर्षि के अधूरे कार्यों को पूरा करेगा आर्य समाज -प्रकाश आर्य

महर्षि की जयंती का दिल्ली में शुभारंभ हमारा सौभाग्य-धर्मपाल आर्य

विश्व की सभी समाजों को सुन्दर तरीके से सजाया जाएगा और सभी समाजें अपने-अपने स्थान से ही रहेंगी सहभागी -भुवनेश खोसला

प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका

किसी भी बड़े आयोजन को करने से पूर्व उसकी पूरी विधिवत योजना बनाना और फिर उसे पूरी तरह क्रियान्वित करना आर्य समाज का अनुभूत सिद्धांत है। जैसा कि सर्व विदित ही है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती पर विश्व भर में होने वाले 2 वर्षीय आयोजनों का भव्य शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों द्वारा होगा। 2 वर्षीय आयोजनों के भव्य शुभारंभ को लेकर 15 जनवरी 2023 को आर्य समाज, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के प्रांगण में विशाल बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक से पूर्व आर्यवीर दल/वीरांगना दल, आर्य केन्द्रीय सभा और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठकें सम्पन्न हुई महर्षि की 200 वीं जयंती के आयोजन को लेकर हुई बैठक में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रकाश आर्य जी, पंजाब केसरी की निदेशक श्रीमती किरण चोपड़ा जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के संरक्षक श्री कन्हैया लाल आर्य जी, बिहार सभा के प्रधान श्री संजीव चौरसिया जी, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी, दिल्ली की सभी आर्य समाजों के अधिकारी, आर्यवीर दल/वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के अधिकारी, सभी वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, भारतीय हिंदू शुद्धि सभा, आर्य प्रांतीय महिला सभा, पुरोहित सभा और अनेक संगठनों के अधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों के भव्य शुभारम्भ समारोह 12 फरवरी 2023, इन्दिरा गांधी इंडोर स्टेडियम की सम्पूर्ण बैठक का संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने किया। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के साथ हुई 31 दिसंबर की बैठक का ब्योरा देते हुए सभी सभासदों को बताया कि प्रधानमंत्री जी का व्यक्तित्व इतना महान है कि उन्होंने 19 मिनट तक लगातार सरलता और सहजता से हमारी बातों को सुना। आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल ने उन्हें बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती के 200 वीं जयंती के

- शेष पृष्ठ 5 पर

बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

- 12 से 19 फरवरी पूरे सप्ताह भारत सहित विश्व के सभी आर्य परिवार अपने घरों को दीपमाला/लाइटिंग से सुन्दर सजाएंगे
- लाइटिंग से सुसज्जित घरों के फोटो सोशल मीडिया पर और अपने मित्र सर्कल में भेजेंगे तथा बधाई संदेश और महत्व भी लिखें
- भारत तथा विश्व के आर्य समाज मंदिरों को लाइटिंग से भव्यता पूर्वक सजाया जाएगा और सुसज्जित भवन के सामने आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य सामूहिक चित्र लेकर सोशल मीडिया और अपने मित्रों को भेजें
- सभा द्वारा 200 वीं जयंती का बनाया हुआ बड़ा होर्डिंग्स अपने आर्य समाज के सामने लगाएं और अन्य संसाधनों से भी अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें
- 15 फरवरी दयानंद दशमी को आर्य समाजों में यज्ञ करें एवं गरीबों तथा वंचित वर्ग को ध्यान में रखकर सेवा कार्य जैसे भोजन, फल, वस्त्र, पुस्तक आदि साहित्य का वितरण करें
- 12 फरवरी 2023 को दिल्ली और आस-पास की समस्त आर्य समाजें अपने हर आयु वर्ग के सदस्यों के साथ भारी संख्या में बसों द्वारा कार्यक्रम में पहुंचे, सभी आर्यजन गले में पीत वस्त्र, सिर पर केसरिया पगड़ी अथवा टोपी पहनकर, महर्षि की महिमा के गीत गाते हुए, नारे लगाते हुए उत्साह पूर्वक कार्यक्रम स्थल पर प्रवेश करें
- दिल्ली से दूर भारत एवं विश्व की समस्त आर्य समाज एवं आर्य संस्थाएं 12 फरवरी को 10:00 से 1:00 बजे तक का विशेष आयोजन अपने संस्थानों में रखें, जिसमें एक बड़ी स्क्रीन लगाकर सभी आम जनता को आमंत्रित कर दिल्ली से मोदी जी का आह्वान् उद्बोधन अवश्य सुनें और सबको सुनाएं

महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती के शुभारंभ समारोह को लेकर आयोजित बैठक में उपस्थित सर्वश्री सुरेश चन्द्र आर्य, सुरेन्द्र कुमार आर्य, प्रकाश आर्य, धर्मपाल आर्य, श्रीमती किरण चोपड़ा, विद्यामित्र ठुकराल, सुरेन्द्र रैली, कन्हैया लाल आर्य, आचार्य ऋषिपाल, संजीव चौरसिया एवं अन्य महानुभावों सहित आर्य अधिकारी एवं कार्यकर्ता

वेदवाणी-संस्कृत

हे परमेश्वर! हम तेरे रथ्य और सम्भजन करने वाले हों

वेद-स्वाध्याय

नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योउन पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम र थ्यः सदासाः॥

–ऋक्. 4 । 16 । 21

ऋषिः-वामदेवः॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-निचृत्पङ्क्तिः॥

शब्दार्थ– **इन्द्र**=हे इन्द्र! **नु**=निःसन्देह तू **स्तुतः**=स्तुति किया गया है, **नु**=अब भी तू **गृणानः**=मुझसे स्तूयमान होता हुआ **जरित्रे**=मुझ स्तोता के लिए **इषम्**=इष्ट वस्तु को, अन्न को **नद्यः न**=नदियों की भाँति **पीपेः**=भरपूर कर दे। **हरिवः**=हे हरियोंवाले! **ते**=तेरा **नव्यम्**=नया **ब्रह्म**=अनुभव, ज्ञान **अकारि**=मैंने किया है, मैं **धिया**=बुद्धि और कर्म से **रथ्यः**=तेरे रथ के योग्य और **सदासाः**=तेरा सदा संभजन करने वाला **स्याम**=होऊँ।

विनय– हे परमेश्वर! तू सदा सब सन्तों द्वारा स्तुति किया गया है। मैं भी आज तेरी ही स्तुति कर रहा हूँ। स्तूयमान होता हुआ तू अब तो मुझ स्तोता की भी इच्छाओं को पूर्ण कर दे। मुझे वह 'इष' प्रदान कर दे जिसका मैं भूखा हूँ। इस अन्न से तू मुझे छका दे। जैसे नदियाँ जल से भरपूर होती हैं, वैसे तू मुझे मेरे 'इष' से भरपूर कर दे। मैं तो तेरे दर्शन का भूखा हूँ। अपना यह दर्शन देकर हे इन्द्र! तू मुझे पूरी तरह परितृप्त कर दे। मैंने आज तेरा नया अनुभव किया है, तेरे एक नये स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया है और मैंने तेरे इसी स्वरूप के खूब गुण गाये हैं। हे हरिवन्! तू अब अपने इस रूप के दर्शन देकर मुझे पूरी तरह तृप्त कर दे। हे हरियोंवाले! मैं देखता हूँ कि तू अपने इस संसाररूपी रथ को अपनी ज्ञान-क्रिया और बलक्रिया के हरियों (घोड़ों) से संचालित कर रहा है। तेरे इस स्वरूप को देखकर मैं अब और कुछ नहीं चाहता, इतना ही चाहता हूँ कि मैं तेरे इस रथ के योग्य हो जाऊँ, 'रथ्य' हो जाऊँ, इस तेरे संसार में बसने योग्य हो जाऊँ सच्चा मनुष्य बन जाऊँ, तेरा मनुष्य बन जाऊँ। अब मैं तेरा मनुष्य बनकर ही इस संसार में रहना चाहता हूँ। तेरे हरिवान् रूप को देखकर अब मैं चाहता हूँ कि अपनी बुद्धि से, अपने कर्म से तेरा रथ्य हो जाऊँ और सदा तेरा संभजन करने वाला हो जाऊँ। तेरा रथ्य होने के लिए यह आवश्यक है कि मैं सदा तेरा संभजन करूँ। इसलिए हे इन्द्र! अब तू ऐसी कृपा कर कि मैं अपनी प्रत्येक बुद्धि से, अपने प्रत्येक कर्म से सदा रथ्य बना रहूँ और सदा तेरा संभजन करने वाला बना रहूँ।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

नेपाल में बढता ईसाईयत का प्रचार चिन्ता ही नहीं गम्भीर चिन्तन का विषय

मिशनरीज के जाल में उलझता नेपाल

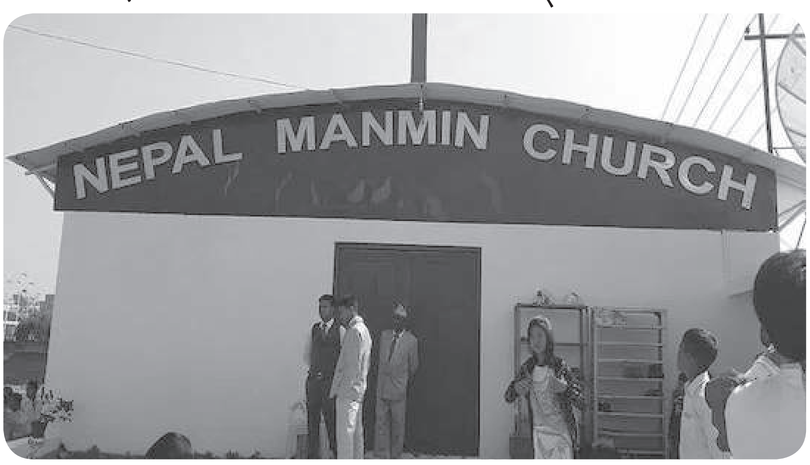

"धर्म परिवर्तन करने वाले नए लोग इस धार्मिक समागम में दुआ के लिए अपने हाथ उठाते हैं। इनमें से अधिकांश लोग तमांग समुदाय से थे और पुरातन अध्यात्मिक संप्रदाय लामा पंथ को मानने वाले थे। इस इलाक़े में पैंग की तरह अधिकांश मिशनरीज़ दक्षिण कोरिया से हैं और उन्होंने नेपाल में तेज़ी से ईसाई धर्म को फैलाने में बड़ी भूमिका निभाई है। नेपाल में पिछले दो दशकों में पैंग ने क़रीब 70 चर्चों को बनते देखा है, इनमें अधिकांश ढडिंग ज़िले में हैं, जोकि राजधानी काठमांडू से दो घंटे की दूरी पर है। पैंग का दावा है, पहाड़ की लगभग हर घाटी में चर्च बनाए जा रहे हैं। नेशनल क्रिश्चियन कम्युनिटी सर्वे के ताज़ा आंकड़े के मुताबिक हिन्दू बहुल देश में इस समय कुल 7758 चर्च बन चुके हैं और इन सबके पीछे दक्षिण कोरिया के मिशनरियों का बड़ा हाथ है। कोरियन वर्ल्ड मिशन एसोसिएशन के मुताबिक़, फिलहाल दक्षिण कोरिया के विदेशों में 22,000 मिशनरी इस काम को अंजाम दे रहे हैं।"

साल था 2016 महीना था अक्टूबर का। नेपाल की राजधानी काठमांडू में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन चल रहा था। मंच पर नेपाल की राष्ट्रपति विद्यादेवी भंडारी उपस्थित थी। भारत समेत अनेकों देशों के विद्वानों और चिंतको द्वारा धर्मांतरण के विरुद्ध आवाज उठाई जा रही थी। मंच से नेपाल के कई सामाजिक चिंतको ने भी इस गंभीर मामले पर अपनी लचता व्यक्त भी की थी। वाग्मती विद्यालय के संचालक रामप्रसाद विद्यालंकार ने अपनी राय रखते हुए कहा था कि नेपाल की असली पहचान उसका हिन्दू राष्ट्र होना था न कि धर्मनिरपेक्ष देश। विदेशों से आये धन के कारण हमारे देश के नेता तो जीत गये किन्तु नेपाल हार गया। वर्ष 2016 में आर्य सन्देश पत्रिका के संपादकीय में इस बारे तब एक लेख भी दिया गया था।

आज इन बातों को कोई 6 वर्ष बीत गये। किन्तु अब जैसे ही नेपाल की धार्मिक जनसंख्या के आंकड़े प्रस्तुत हुए तो एक बार फिर मुद्दा प्रासंगिक बन गया। क्योंकि साल 1951 नेपाल में दूर-दूर तक एक भी ईसाई नहीं था। इसके दस साल बाद यानि साल 1961 में करीब 450 लोग ईसाई पाए गये। लेकिन 90 का दशक आते-आते यानि 1990 के दशक में नेपाल में इसाइयों की आबादी 20 हजार आंकी गयी। अगले दस सालों में ये संख्या करीब 70 हजार तक पार कर गयी और नेपाल में चर्च देखे जाने लगे थे। हालाँकि कुछ साल पहले तक नेपाल एक हिन्दू राष्ट्र के तौर पर जाना जाता था पर अब यह सेक्युलर स्टेट बन चुका है। हिन्दू अब भी बहुसंख्यक हैं लेकिन सवाल यही है कि कब तक?

महासम्मेलन के अगले वर्ष यानि 23 दिसम्बर साल 2017 को साउथ चीन मॉर्निंग पोस्ट की एक रिपोर्ट में भी यही सनसनीखेज खुलासा किया गया था कि धर्मांतरण पर रोक के बावजूद नेपाल में कैसे फैल रहा ईसाई धर्म! अख़बार ने लचता जाहिर करते हुए लिखा था कि बौद्ध बोरिया बिस्तर समेट ले ईसाइयत आ रही है। साउथ चीन मॉर्निंग पोस्ट के लिखने का कारण ये था कि नेपाल में जहाँ साल दो हजार में ईसाई करीब 70 संख्या में थे वही 2011 तक ईसाई समुदाय की संख्या 3,76,000 हो गई थी। यानि दस साल में तीन लाख की संख्या बढ़ चली थी। वो भी उस देश में जिसकी जनसँख्या मात्र 3 करोड़ के आप-पास है। किन्तु जनगणना के ताज़ा आंकड़े नेपाल में ईसाइयों की संख्या 5,45,000 के पार बता रहे है।

पिछले 20 सालों में नेपाल में ईसाई मिशनरियों का जाल नेपाल के तमाम अंचलों में तेजी से फैल गया हैं। नेपाल के बुटवल में कई चर्च बन चुके हैं। इसके अलावा नारायण घाट से बीरगंज के बीच कोपवा, मोतीपुर, आदि में हजारों लोगों ने ईसाई धर्म स्वीकर कर छोटे छोटे चर्च स्थापित कर लिए हैं। बीबीसी इंग्लिस की एक रिपोर्ट बता रही है कि हिमालय की तलहटी में बसे झारलांग गांव में एक नई चर्च की स्थापना करते हुए जब कोरियाई पास्टर पैंग चांग-इन ने कहा, 'यीशू की जय', तो उनकी आंखों में खुशी के आंसू थे।

धर्म परिवर्तन करने वाले नए श्रद्धालु इस धार्मिक समागम में दुआ के लिए अपने हाथ उठाते हैं। इनमें से अधिकांश लोग तमांग समुदाय से थे और पुरातन अध्यात्मिक संप्रदाय लामा पंथ को मानने वाले थे। इस इलाक़े में पैंग की तरह अधिकांश मिशनरीज़ दक्षिण कोरिया से हैं और उन्होंने नेपाल में तेज़ी से ईसाई धर्म को फैलाने में बड़ी भूमिका निभाई है। नेपाल में पिछले दो दशकों में पैंग ने क़रीब 70 चर्चों को बनते देखा है, इनमें अधिकांश ढडिंग ज़िले में हैं, जोकि राजधानी काठमांडू से दो घंटे की दूरी पर है। पैंग का दावा है, पहाड़ की लगभग हर घाटी में चर्च बनाए जा रहे हैं। नेशनल क्रिश्चियन कम्युनिटी सर्वे के ताज़ा आंकड़े के मुताबिक हिन्दू बहुल देश में इस समय कुल 7,758 चर्च बन चुके हैं और इन सबके पीछे दक्षिण कोरिया के मिशनरियों का बड़ा हाथ है। कोरियन वर्ल्ड मिशन एसोसिएशन के मुताबिक़, फिलहाल दक्षिण कोरिया के विदेशों में 22,000 मिशनरी इस काम को अंजाम दे रहे हैं।

यदि इस बीमारी का कारण जाने तो हमें कुछ समय पहले के अतीत में झांक कर देखना होगा या कहो नेपाल में इस अस्थिरता को समझने के लिए इसको दो हिस्सों में बांटना होगा। एक समय वो जब यहां राजतंत्र हुआ करता था और दूसरा समय वो जब लोकतंत्र आया। साल 1923 में ब्रिटेन से हुई संधि के कारण नेपाल को संप्रभुता तो मिल गई, लेकिन भारत की आजादी के प्रभाव में नेपाल में भी लोकतांत्रिक आंदोलन शुरू हो गए। नेपाल की कांग्रेस पार्टी ने इन आंदोलनों को तेज किया। साल 1951 में राणाओं की सत्ता खत्म हो गई। राजा त्रिभुवन को संवैधानिक प्रमुख बना दिया गया। किन्तु इसके बाद नेपाल की राजनीति में साल 1959 एक महत्वपूर्ण साल साबित हुआ। इसी साल नेपाल ने अपना लोकतांत्रिक संविधान बनाया

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य संदेश

प्रकृति का स्वास्थ्य संदेश

इस अखण्ड ब्रह्माण्ड में तीन तत्त्व ही प्रमुख हैं- ईश्वर, जीव और प्रकृति। ईश्वर सम्पूर्ण जगत का नियन्ता, जीव भोक्ता तथा प्रकृति भोग्य पदार्थ है। ईश्वर सृष्टि के कण-कण में समाया हुआ है। सम्पूर्ण प्रकृति ईश्वर का गुणगान करती है और जीवमात्र का पालन-पोषण करती है। मानव जीवन की यात्रा सुखद, सुगम हो इसके लिए उसे प्रकृति की अवेहलना नहीं करनी चाहिए।

प्रकृति और मानवदेह का जन्मजात संबन्ध है। मानव प्रकृति की गोद में जन्म लेता है और उसी के विशाल प्रांगण में क्रीड़ा करते-करते एक दिन नया जन्म लेकर प्रकृति की गोद में आ जाता है। प्रकृति का यह विधान अटल है कि जो जीव उसकी उपेक्षा करता है वह उसको दण्डित अवश्य करती है। प्रकृति रूपी अमृत प्रसाद को ग्रहण करने के लिए जीव को सजग एवं सावधान जरूर रहना पड़ेगा। क्योंकि स्वस्थ जीवन अथवा किसी भी प्रकार की पीड़ा के बिना औषध ग्रहण किए प्रसन्नचित, स्वस्थ रहना ही कुशलता है।

"रोगों का मूल कारण क्या है? अनुचित आहार, स्वादु भोजन, लोभ से अधिक खाना, बिना समय ग्रहण करना, देर रात्रि में खाना, बेमेल खाना, बिना चबाए खाना, भोजन के साथ-साथ ज्यादा पानी पीना, भोजन के बाद शारीरिक मेहनत न करना इत्यादि, यकृत की खराबी, पुराना ज्वर, नींद की कमी होना, धूम्रपान, गुटका, शराब, नशीले पदार्थों का सेवन करना, मैदे से बनी डिब्बा बंद चीजों का सेवन, गरिष्ट तली हुई चीजों का प्रयोग, चाय-काफी का अधिक सेवन आदि उपर्युक्त कारणों से व्यक्ति अस्वस्थ रहता है। केवल डॉक्टर या वैद्य हकीमों की दवाइयों से सन्तोष करके स्वयं को स्वस्थ मान लेना अनुचित है। शरीर में चाहे जितनी भी खराबी हो केवल दवाइयों के अन्धकार में ही हम भ्रमण करते हैं और जब रोग बढ़ जाता है तब मृत्युवश होकर ईश्वर पर छोड़ देते हैं। किसी भी रोग से पूर्ण रूपेण परिचित होने के लिए उसका स्वभाव और कारण से परिचित होना अति आवश्यक है।"

आश्चर्यजनक बात यह है कि सब कुछ जानते हुए भी लोग शरीर का ध्यान नहीं रखते। ईश्वर ने मानव को देह-रूपी अनमोल तथा अनुपम यन्त्र दिया है। किन्तु इसके बारे में हम सदैव लापरवाही बरतते हैं। शरीर रूपी यन्त्र को प्रकृति के संसर्ग की कितनी आवश्यकता है यह जानना अति आवश्यक है। आज का मानव उचित आहर-विहार के अभाव में रुग्ण होकर स्वास्थ्य की अवहेलना करते हुए अल्पायु में ही संसार को त्यागकर चल देता है अथवा यूं भी कह सकते हैं कि उसकी असावधानी को प्रकृति बर्दाश्त नहीं करती और दण्डित कर देती है।

रोगों का मूल कारण क्या है? अनुचित आहार, स्वादु भोजन, लोभ से अधिक खाना, बिना समय ग्रहण करना, देर रात्रि में खाना, बेमेल खाना, बिना चबाए खाना, भोजन के साथ-साथ ज्यादा पानी पीना, भोजन के बाद शारीरिक मेहनत न करना इत्यादि, यकृत की खराबी, पुराना ज्वर, नींद की कमी होना, धूम्रपान, गुटका, शराब, नशीले पदार्थों का सेवन करना, मैदे से बनी डिब्बा बंद चीजों का सेवन, गरिष्ट तली हुई चीजों का प्रयोग, चाय-काफी का अधिक सेवन आदि उपर्युक्त कारणों से व्यक्ति अस्वस्थ रहता है। केवल डॉक्टर या वैद्य हकीमों की दवाइयों से सन्तोष करके स्वयं को स्वस्थ मान लेना अनुचित है। शरीर में चाहे जितनी भी खराबी हो केवल दवाइयों के अन्धकार में ही हम भ्रमण करते हैं और जब रोग बढ़ जाता है तब मृत्युवश होकर ईश्वर पर छोड़ देते हैं। किसी भी रोग से पूर्ण रूपेण परिचित होने के लिए उसका स्वभाव और कारण से परिचित होना अति आवश्यक है।

इंसान को पशु-पक्षियों के सहज जीवन से बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। वे बीमार होने पर प्रकृति का सहारा लेकर स्वास्थ्य लाभ करते हैं। लेकिन संसार का सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान प्राणी मानव विज्ञान के इस आधुनिक युग में अपनी प्राचीन शुद्ध-सात्त्विक ईश्वर द्वारा निर्देशित दिनचर्या को न अपनाकर रोगों को बढ़ा रहा है और बढ़ते हुए रोग समाज के लिए चिन्ता जनक हैं।

यदि मनुष्य अपने विचारों, इच्छाओं अथवा कार्यों से प्रकृति के सामंजस्य को बिगाड़ता है तो उसके पुनः परिणाम का दायित्व भी उसी का होता है। प्रकृति उपासक को पुरस्कृत करती है और अवहेलना करने वाले को दण्ड देती है। नियम के अनुसार हम स्वयं ही अपने आपको पुरस्कृत या दण्डित करते हैं।

जीवन में जो कुछ भी घटित होता है और विशेषकर जो दुःखद होता है, उसके लिए लोग प्रायः भाग्य को ही कारण मानते हैं। लेकिन सब कुछ दृश्य या अदृश्य ज्ञात अथवा अज्ञात नियमों का परिणाम मात्र है। दुःखद परिणाम इस सच्चाई का संकेत हैं कि हमसे कोई भूल हो गई है किसी प्राकृतिक नियम का हमने जरूर कहीं-न-कहीं उल्लंघन किया है। जिसके परिणामस्वरूप हमें ऐसा दुःख प्राप्त हुआ है।

आज के आपा-धापी एवं व्यस्त जीवन में इन्सान अपनी संस्कृति, सभ्यता और प्रकृति को भूलकर पाश्चात्य विषमताओं को अपनाकर अपने शरीर को रोगी बना रहा है। यह तो अंधकार का अनुकरण मात्र ही कर रहा है। आजकल इंसान उठने-बैठने में, सोने-जागने में, खाने-पीने में, चलने फिरने में, पढ़ने-लिखने में, हंसने और मुस्कराने में भी नाटक ही कर रहा है। इसको न तो शयन की फुरसत है और न जागरण की चिन्ता।

-क्रमशः अगले अंक में...

बाल बोध

कविता के रूप में -गणतंत्र दिवस का संदेश

भारत के नार-नारी जागो, वैदिक धर्म निभाओ तुम।
विमल पर्व गणतंत्र दिवस को, अच्छी तरह मनाओ तुम।।
आजादी के लिए करोडों, वीरों ने दी कुर्बानी।
फांसी के फन्दों को चूमा, अमर रहेंगे बलिदानी।।
हंस-हंस करके गोली खाई, भोगा या काला पानी।
भारी कष्ट सहे जेलों में, हार कभी भी ना मानी।।
उन बलवानों की गाथाएं, झूम-झूम कर गाओ तुम।
विमल पर्व गणतंत्र दिवस को, अच्छी तरह मनाओ तुम।।1।।
भारत था परतंत्र जुल्म, अंग्रेज रात-दिन ढाते थे।
चौराहों पर खुलकर पापी, गौ हत्या करवाते थे।।
देश भक्त ईश्वर भक्तों को, गोरे दुष्ट सताते थे।
ललनाओं की लाज लूटते, पापी पाप कमाते थे।।
भारत का इतिहास पढो तुम, देशभक्त बन जाओ तुम।
विमल पर्व गणतंत्र दिवस को, अच्छी तरह मनाओ तुम।।2।।
स्वामी दयानन्द योगी ने, वैदिक बिगुल बजाया था।
अंग्रेजो भारत से भागो, नारा साफ लगाया था।।
भारत की भोली जनता को, ऋषिवर ने समझाया था।
जाति-पाति का रोग मिटाओ, सुख का मार्ग बताया था।
गुण गाओ दयानन्द संत के मानव श्रेष्ठ कहाओ तुम।
विमल पर्व गणतंत्र दिवस को, अच्छी तरह मनाओ तुम।।3।।
तात्या टोपे, कुंवर सिंह थे, भारत मां के दीवाने।
तुलाराम, मंगल पांडे थे, वीर बहादर मस्ताने।।
बहादुर शाह अरू तुलाराम थे, दोनो योद्धा मर्दाने।
लक्ष्मी बाई आजादी के, गाती थी निशदिन गाने।।
नंदकिशोर वीर बलशाली, को समझो हर्षाओ तुम।
विमल पर्व गणतंत्र दिवस को, अच्छी तरह मनाओ तुम।।4।।
सौ में से कम से कम अस्सी, मदिरा पीते हैं नेता।
कुर्सी पर है नजर खलों की, देश दिखाई ना देता।।
दया, धर्म को भूल गए हैं, पाप रात-दिन करते हैं।
मुर्गा, मछली, बकरा खाते ईश्वर से ना डरते हैं।।
देश द्रोही गद्दारों को, अब मत मुंह लगाओ तुम।
विमल पर्व गणतंत्र दिवस को, अच्छी तरह मनाओ तुम।।5।।
युवकों और युवतियों जागो, देश भक्त बलवान बनो।
बनो सदाचारी, व्रतधारी, भारत मां की शान बनो।।,
बिस्मिल, शेखर, भगतसिंह बन, जग में घूम मचाओ तुम।
''नन्दलाल निर्भय'' भारत की, जग में शान बढाओ तुम।
विमल पर्व गणतंत्र दिवस को, अच्छी तरह मनाओ तुम।।6।।

-पण्डित नन्दलाल निर्भय

महर्षि की 200 वीं जयंती के शुभारंभ समारोह की तैयारियों हेतु आर्य नेताओं के प्रेरक उदबोधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों की पूरी टीम का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2006 2012 और 2018 में आपने जिस महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया था, उसको दोहराने का यह शुभ अवसर आ गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि 12 फरवरी 2023 को महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती पर विश्व भर में दो वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ के अवसर पर, जिसका विश्व के सबसे लोकप्रिय, ख्याति प्राप्त नेता, भारत के प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी स्वयं अपने कर कमलों से उद्घाटन करेंगे, उसे भी दिल्ली सभा की पूरी टीम, हरियाणा सभा और उत्तर प्रदेश सभा विशेष रूप से सफल बनाएगी। इस विशाल कार्यक्रम में पूरे विश्व के आर्य नेता और आर्यजन उपस्थित रहेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित सभी अधिकारियों और कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए अपने उद्बोधन में कहा की महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती का आयोजन, हम सबके लिए एक महान अवसर है। इसे हम सब पूरे योजनाबद्ध तरीके से सफल बनाएंगे, सभी अपने अपने दायित्व शक्ति के साथ निर्वहन करें। इसके लिए ईश्वर सबको शक्ति दे। उन्होंने समूह के शक्ति बल को अत्यंत अद्भुत बताया और कहा कि आने वाला समय आर्य समाज का होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। क्योंकि आर्य समाज के पास सत्य, तर्क और युक्ति है। आज कंप्यूटर का जमाना है, आप देखें कि कंप्यूटर के पास भी लॉजिक ही तो है। इसलिए इस महान अवसर को हमें चूकना नहीं, इसे हमें सफल बनाना है। सारा संसार आर्य समाज की ओर देख रहा है, इस आयोजन के माध्यम से आगे आने वाले 100 वर्षों को हमें सुरक्षित करना है, आने वाली पीढ़ियां प्रेरणा लें सकें, इस तरह से कार्य करना है, सबका आभार-धन्यवाद।

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक श्री कन्हैयालाल आर्य जी ने 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित होने वाले महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती के आयोजनों के शुभारंभ पर मोदी जी के आगमन को लेकर उत्साह का प्रदर्शन करते हुए कहा कि हरियाणा सभा का इतिहास एक आंदोलनकारी इतिहास रहा है, हम तो करो या मरो की बात पर विश्वास रखते हैं। इसलिए हरियाणा सभा पूरी शक्ति के साथ दलबल सहित सक्रिय रहेगी और इस भव्य आयोजन को सफल करेगी।

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री संजीव प्रसाद चौरसिया जी ने कहा कि यह बड़े गौरव के क्षण हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जयंती हम सबके लिए प्रेरणा का पर्व है, इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा राष्ट्र उत्थान और मानव कल्याण के कार्यों को पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ाना है। हम बिहार से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेंगे और इस आयोजन को पूरी शक्ति के साथ सफल बनाएंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी ने कहा कि आप सबके बीच आकर मुझे उर्जा मिली है और इसके लिए मैं आप सबका हार्दिक धन्यवाद करता हूं। 2018 का सम्मेलन मैंने देखा था और उस समय की तरह महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जयंती का आरंभ हमारे लिए उत्साह की बात है। आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका ने कोरोना काल में भी तीन सम्मेलन सफलता पूर्वक आयोजित किए और 28 से 30 जुलाई 2023 तक हम महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जयंती पर अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन करेंगे। आप सभी उसमें सादर आमंत्रित हैं।

जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन और अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने उपस्थित अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि आज दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी को विराजमान देकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आपका मार्गदर्शन और नेतृत्व आर्य समाज के लिए एक बहुत बड़ा संबल है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती हम सबके लिए एक महान अवसर है। 12 फरवरी 2023 के कार्यक्रम को सफल बनाने की हमारी सबकी जिम्मेदारी है। संपूर्ण मानव समाज को जगाने के लिए आर्य समाज को आगे आना होगा और इसके लिए सबको मिलकर चलना होगा। भारत और विश्व की सभी आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों को पूरी निष्ठा से सक्रिय होकर समाज में जागृति प्रदान करने का कार्य करना होगा। यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है, सभी को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई।

मध्य भारतीय सभा के प्रधान श्री प्रकाश आर्य जी ने दिल्ली सभा की उत्साहित पूरी टीम को देखकर कहा कि संख्या बल और कर्मठता को देखकर हमें विश्वास हो गया है कि महर्षि की 200 वीं जयंती का कार्यक्रम भव्यता के साथ सफल होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती के हम पुत्र हैं हमें उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना है, और यह हमारा परम कर्तव्य है। इस अवसर पर हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का सपना साकार करने की ओर कदम बढ़ाएंगे। संपूर्ण विश्व में और विशाल आयोजन होंगे, जिनका शुभारंभ 12 फरवरी को प्रधानमंत्री जी द्वारा उद्घाटन किया जा रहा है। यह अपने आप में गर्व की बात है और अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। इस अवसर पर हम अपने मन को संकल्पित करें।

पंजाब केसरी की निदेशक श्रीमती किरण चोपड़ा जी ने उयघोष करते हुए कहा कि मैं आर्य पुत्री हूं और आप सबके बीच जाकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूं। इससे पहले मैं महाशय धर्मपाल जी की दानशीलता का उल्लेख सुनती थी और आज श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को प्रत्यक्ष देख रही हूं। आपकी सेवा भावना और दानशीलता प्रेरणा है। मैं कट्टर आर्य समाजी परिवार से हूं, कर्म से आर्य समाजी हूं मेरा विवाह आर्य समाज जालंधर में एक रुपए के शगुन से हुआ था, मैंने अपने बेटे का विवाह भी आर्य समाज जी. के. पार्ट-2 में एक रुपए के शगुन से ही किया और यह परंपरा आगे भी चलती रहेगी। अभी मैं सुन रही थी कि विनय जी ने चार नारे बताए, उसमें युवाओं को जोड़ो का नारा शामिल अवश्य कीजिए। आज युवा शक्ति को सुपथ दिखाना जरूरी है, महिलाओं की रक्षा के लिए भी आर्य समाज को आगे आना होगा। 12 फरवरी को महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती के आयोजनों का शुभारंभ है। जिसमें मोदी जी आ रहे हैं। मोदी जी एक प्रेरक मिसाल हैं, उनकी प्रेरणा से आज हम कह सकते हैं हिंदू होना गर्व की बात है तो आर्य समाजी होना सौभाग्य की बात है। आर्य समाज महर्षि के कार्यों को पूरा करे, विपरीत परिस्थितियों में आर्य समाज की तरफ दुनिया देख रही है।

इंद्रप्रस्थ गुरुकुल के आचार्य ऋषिपाल जी ने अपने उद्बोधन में कहां कि महर्षि दयानन्द सरस्वती हम सबके पिता तुल्य हैं, जिसने सब कुछ मानव धर्म के लिए किया है, उनका जन्मदिन हम सबके लिए अत्यंत प्रेरणा का अवसर है। इस अवसर पर हरियाणा सभा के प्रधान श्री राधा कृष्ण आर्य जी ने भी मुझे कहा कि हम पूरी शक्ति के साथ इस आयोजन को सफल बनाने में एकजुट होकर कार्य करेंगे।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्द कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 12 फरवरी 2023 को श्री नरेन्द्र मोदी जी के समक्ष आर्य समाज अपने सभी सेवा कार्यों और बलिदानियों की गौरव गाथा का विशिष्ट प्रदर्शन करना चाहिए। मोदी के समक्ष हम सबको अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए। उन्होंने कार्यक्रम की सफलता का विश्वास जताया।

दिल्ली सभा के प्रधान, महामंत्री, कोषाध्यक्ष सहित अंतरंग सभा के सभी अधिकारियों ने शपथ लेकर किया नई परंपरा का आरम्भ

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी एवं श्री प्रकाश आर्य जी द्वारा शपथ ग्रहण करते हुए दिल्ली सभा के प्रधान सर्वश्री धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष विद्यामित्र ठुकराल, प्रस्तोता आर्य वि. प. सुरेन्द्र कुमार रैली, महामंत्री विनय आर्य एवं सभा के उप प्रधान ओम प्रकाश आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, शिव कुमार मदान, श्रीमती मृदुला चौहान, मंत्री नीरज आर्य, सुरेन्द्र आर्य, सुखबीर सिंह आर्य, कृपाल सिंह आर्य, बिरेन्द्र सरदाना, सुरेश चन्द्र गुप्ता, मंत्री शिव शंकर गुप्त जी अनुपस्थित रहे। प्रतिष्ठित सदस्य पतराम त्यागी, नरेश पाल आर्य, राजेन्द्र कुमार वर्मा, कीर्ति शर्मा एवं शपथ लेते हुए अंतरंग सदस्य

15 जनवरी 2023 को आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने की। महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने ईश्वर स्तुति प्रार्थना मंत्रों के पाठ से आरम्भ करते हुए गत बैठक से लेकर अब तक के सभी दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए दो मिनट का मौन कराया। तदोपरांत इस बैठक में आर्य समाज के सेवा कार्यों को गति देने, महर्षि दयानंद सरस्वती के 200 वीं जयंती के शुभारम्भ को लेकर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जिम्मेदारियों का निर्वहन करने की विस्तृत चर्चा हुई। इससे पूर्व सभा अधिकारियों ने आर्य समाज के इतिहास में एक नई परम्परा का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए श्री सुरेश चंद आर्य, प्रधान सार्वदेशिक सभा एवं श्री प्रकाश आर्य, प्रधान मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सभा अधिकारियों ने शपथ ग्रहण किया। इस अवसर पर सबसे पहले सभा प्रधान, श्री धर्मपाल आर्य जी ने शपथ ली, इसके उपरांत श्री विद्यामित्र ठुकराल जी ने कोषाध्यक्ष, श्री सुरेन्द्र रैली जी ने प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद, श्री विनय आर्य जी ने सभा महामंत्री, सभा के उपप्रधानों, सभा के मंत्रियों, आमंत्रित सदस्यों, विशिष्ट आमंत्रित सदस्यों, विशेष आमंत्रित सदस्यों, प्रतिष्ठित सदस्यों, वेद प्रचार अधिष्ठाता, आर्य वीर दल अधिष्ठाता, आदि अधिकारियों ने शपथ ली और आर्य समाज के सेवा कार्यों को नियम, सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को निभाते हुए आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाजों के विभिन्न संगठनों की बैठक सम्पन्न

इस अवसर पर श्रीमती किरण चोपड़ा जी को सम्मानित करते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य एवं श्री सुरेश चन्द्र आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के संस्थापकों में से एक श्री गिरीश खोसला जी को सम्मानित करते हुए उपस्थित समस्त आर्यनेता एवं अधिकारीगण

2 वर्षीय आयोजनों का शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में आरंभ होगा, जिसका उद्घाटन आपके कर कमलों से कराने का हम निवेदन करते हैं, तो उन्होंने पूछा कि इस अवसर पर आर्य समाज की क्या क्या योजनाएं हैं? हमने उन्हें चार मुद्दे बताए। रिश्ते बचाइए, मतलब जो आज पूरे देश में पचास एन.जी.ओ. नो चाइल्ड पॉलिसी, चाइल्डलेस परिवार की मुहिम चला रहे हैं, समाज को उनसे सावधान करना है, रिश्ते बचाने हैं, बच्चों के रहित परिवार होने से आज कल रिश्ते हैं खतरे में है, दूसरा गले लगाइए, मतलब जो दलित, पिछड़े लोग है, उनको साथ में जोड़ेगे, प्राकृतिक कृषि बचेगी, जल जीवन बचेगा और समाज को नशा मुक्त बनाना है। यौवन और बचपन को बचाना है। ये 4 मुद्दे सुनकर प्रधानमंत्री जी ने प्रसन्नता व्यक्त की और आर्य समाज के आयोजन में भाग लेने का आश्वासन दिया। 2 वर्षों के आयोजन को लेकर श्री विनय आर्य जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति, आर्य समाज, आर्य परिवार, आर्य सभा, आर्य संस्थान और आर्य समाज से जुड़ा हुआ प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में, परिवार में, इष्ट मित्रों में, रिश्ते नातों में, और अन्य संस्थानों में 5 सत्यार्थ प्रकाश बाँटे, महर्षि दयानंद की जीवनी बांटे और पाँच नए लोगों को जोड़े, जिससे 2025 में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में प्रत्येक व्यक्ति पांच नए साथियों के साथ सम्मिलित हो, ऐसा सबका प्रयास होना चाहिए। विनय जी ने ये भी निवेदन किया कि सभी आर्यजनों को अपने घरों में वेद, महर्षि दयानंद सरस्वती की जीवनी, सत्यार्थ प्रकाश, छत पर ओम का झंडा और नमस्ते का स्टीकर द्वार पर अवश्य लगाना चाहिए। जिससे पता चले कि हम आर्य समाजी हैं और महर्षि के शिष्य हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती के 200 वीं जयंती के शुभारंभ और दो वर्ष तक चलने वाले आयोजनों में सभी आर्यजनों ने सक्रिय रूप से सहभागिता का संकल्प लिया।

आर्य केंद्रीय सभा की बैठक संपन्न

18 फरवरी 2023 को रामलीला मैदान मैदान में ही होगा महर्षि बोधोत्सव का भव्य आयोजन

15 जनवरी को आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य की बैठक में 18 फरवरी 2023 को महर्षि दयानंद सरस्वती के बौधोत्सव, ऋषि मेले के आयोजन को लेकर विशेष रूप से विचार मंथन किया गया। जिसमें आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ की भव्यता और विशालता का वर्णन करते हुए सभी सभासदों से पूछा कि क्या इस बार महर्षि दयानंद का बोधोत्सव रामलीला मैदान में अथवा किसी स्कूल में या अन्य स्थल पर मनाया जाए ? इस पर सभी अधिकारियों ने रामलीला मैदान में ही विशेष आयोजन करने पर सहमति जताई। जिसे आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी ने घोषणा करते हुए कहा कि 18 फरवरी 2023 को रामलीला मैदान में ही महर्षि दयानंद सरस्वती का बोधोत्सव पूरी भव्यता के साथ मनाया जाएगा। सभी ने इस प्रस्ताव का स्वागत किया और सभा संपन्न हुई।

आर्यवीर/वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की बैठक संपन्न

कार्यक्रम में हजारों की संख्या में आर्यवीर/वीरांगनाओं की सहभागिता

15 जनवरी को आर्यवीर दल/वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की बैठक चली, जिसमें आर्यवीर दल दिल्ली के अधिष्ठाता श्री ब्रजेश आर्य जी, महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य जी और श्री सुंदर आर्य जी ने दिल्ली की समस्त शाखाओं के शाखा नायक, शाखा नायिकाओं के साथ गहन चर्चा की और 12 फरवरी 2023 को आयोजित होने वाले कार्यक्रम को लेकर निश्चित किया की महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती के शुभारंभ अवसर पर 75 बसों के माध्यम से दिल्ली की सभी शाखाओं के आर्यवीर/वीरांगनाएं भाग लेंगे और व्यवस्थाओं को संभालेंगे।

Continuing the last issue

What the Vedas Stand for

Rigved, 2. 27. 10, 4. 12. 5, 4. 17. 19, 5. 34. 6, 5. 42. 11, 6. 15.8, 6.62. 8,7. 2. 8, 8. 2. 4, 8. 19. 6, 8. 39. 6, 8. 48. 1, 8. 51. 9, 8. 71. 9, 9. 97. 24, 10. 54. 1, 10. 63. 6, 10. 102. 3; Samaved, 2. 7 (3). 19. 1; Atharvaved, 1 4. 6, 4. 14. 5, 4. 16. 8, 4. 19. 4, 4. 28. 5, 4. 30. 3, 5. 11. 3, 5. 12, 1, 5. 12. 7, 5. 17. 10, 7. 111. 1, 10. 8. 34, 19. 62. 1; Yajurved, 17.69, 31.17. These two catagories of men are said in the Vedas totally different from the uncultured or uncivilised people, who are described practically abominable or detestable and expressed by the words Dasyu (rogue), Rakshas (the wicked and sinners), Kutsa (the depraved), Kutsit (the lowcharactered), Pishach (the filthy and the cruel), and the like: Rigved, 1. 51. 8, 7. 5. 6, 10. 49. 3-4; Atharvaved, 11. 1. 2

But the aim of the teachings is to Aryanise, ennoble, reclaim, civilise and discipline all human beings: Regved 1. 6. 3, 1. 55. 6, 1. 88. 4, 1. 124. 3, 7. 53. 2, 9. 63. 5, 10. 35. 8, 10. 110.1 ‘, 10. 138. 3, 10. 151.3 ; Yajurved, 29. 37; Samaved, 2. 6 (3). 12. 3;

Atharvaved, 2. 13. 4, 5. 12. 1, 5. 12. 7, 10. 3. 2, 12. 5. 5, 20. 17. 4, 20, 26. 6, 20. 4 7 . 12, 20. 69. 11. The Atharvaved (20.124. 5) by impication, of course, states that by misconduct, Aryans lose their status.

(6) Fine Daily Duties of Aayans

The Vedas enjoin fivefold daily duties of an Aryan.

viz., (i) Brahma-Yajna or Divine meditation and acquiring the Vedic knowledge, (ii) Deva-Yajna or the fire-ritual, (iii) Pitri-Yajna or service to parents, teachers and elders, (iv) Atithi-Yajna or accommodating guests, and (v) B’nutYajna, Bali-vaihsva-deva-Yajna or leaving or offering- clean food for the needy and the dependent cattle, ete.

The Atharvaved (5. 26. 1-12) directs devotional meditation or Yogic practice for the direct conception of the Divinity within soul by soul: “Asmin Yajne pra-vidwan Yunaktu suyujah” (5. 26. 3 and 9 in particular), meaning that in this Adorable Divinity, let the enlightened unite or deeply engage through the practice of Yoga, Sandhya or the devotional meditation.

The Yajurved (3.1) states clearly that fire-ritual should be perfomed in the fire raised into flame. The same direction is rspeated several times all over the Vedas. The fire-ritual, Deva-Yajna or Agni-Hotra is the congregational worship, all reciting Vedic verses, when the oblations of the clarified butter or Ghee and a mixture of the medicinal herbs, nutriants, fragrant substances, etc., or Samagri are offered in the fire, leading to purification of the atmosphere and securing of hygienic conditions for one and all.

Pitri-Yajna or service to the living pavents and pleasing them is also enjoined by the Vedas, e. g., Yajurved, 2. 34: “Tarpayata me pitrin” (`Satisfaction be given to my Pitars, protectors, teachers, parents and the respectable elderly people’). At several plaees in the Atharvaved, it’s made specifially clear that Deva, Pitar and Rishi stand for the same.

Reception to and accommodation for the respectable people, coming to an Aryan’s house as guests of honour (Atithi yajna) is, of course, a usual feature in the orient. This is also of the Vedic origin: “Vratyah atithih” (Atharvaved, 15. 11. 1), i. e., ‘A learned, enlightened and holy person coming to one’s door is called an Atithi or guest’; “Vratya tarpayantu” (Atharvaved, 15. 11. 2), i• e. ‘Receive and please such a guest’.

“Aharahah balm it te harantah” (‘Bringing the oblation-remainder food, let us come to thee’)—Atharvaved, 19. 55. 6— is a definite pointer to leaving a part of clean food for the needy, cattle and other dependants. This is called BhutYajna or Bali-vaishva-deva-Yajna.

These five constitute five obligatory duties of all the Aryans according to their capacity and ability. One violating them cannot be called a good follower of the Vedic religion or Aryan.

(7) Sixteen Purificatory Rites.

Likewise, sixteen purifictory rites have been enjoined in the Atharvaved and the other Vedas, which contribute to the physical, mental and spiritual improvement and purification of man. From conception to cremation, there are 16 such purificatory rites or Sanskars, enjoined in the Vedas and followed and advocated by the Smriti writers or law-givers of India. They are obligatory on all the Aryans. Nothing, of course, Should be done for the departed after the physical remains have been cremeted.

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

सम्भव-अभाव-शास्त्र-वेद

92-सम्भव

जो प्रमाण युत युक्ति से
सृष्टि-क्रम-अविरुद्ध ।
विद्वज्जन कहते यहां उसको
‘सम्भव’ शुद्ध ।।113।।

93-अभाव

इच्छित किसी पदार्थ का
जहां न होवे भाव ।
उस प्रभाव से ज्ञान जो
होता वही ‘अभाव’ ।।114।।

94-शास्त्र

सद्विद्याओं के कथन से
जो होवे युक्त ।
सत्य-सत्य शिक्षा करे वही
‘शास्त्र’ उपयुक्त ।।115।।

95-वेद

ईश्वरोक्त जो सत्य सब
विद्याओं के भेद ।
उनसे पूरित सत्य का ज्ञान
कराते ‘वेद’ ।।116।।

साभार :

सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

पाप-कर्म के धार्मिक दिन

पौराणिक कमी पूरी कर देते हैं

24 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 1924 ई. को सनातन धर्म सभा भटिण्डा का वार्षिकोत्सव था। बार-बार आर्य-सिद्धान्तों के बारे में अनर्गल प्रलाप किया गया। शंका-समाधान के लिए विज्ञापन में ही सबको आमन्त्रण था। पण्डित श्री मनसारामजी शंका करने पहुँचे तो पौराणिक घबरा गये। पण्डित श्री मनसारामजी के प्रश्नों से पुराणों की पोल खुल गई। चार प्रश्नों में से एक यह था कि पौराणिक ग्रन्थों में मांस-भक्षण का औचित्य क्यों है? उत्सव के पश्चात् पौराणिकों ने पं. गिरधर शर्माजी को फिर बुलाया। आपने कहा मांस-भक्षण का विधान इसलिए है कि अभक्ष्य का भक्षण करने वाला विशेष दिनों में ही मांस खाए, इसपर पण्डित मनसारामजी ने कहा यदि यह पाप कर्मों की धार्मिक विधि है तो फिर मनुस्मृति में मांस-भक्षण के लिए दण्ड क्यों?

पौराणिक भाई कभी आगा-पीछा नहीं देखते। हित-अहित सोचे बिना वे अपने हितैषी, मनुजता के मान ऋषवर दयानन्द व उनके शिष्यों को जली-कटी सुनाना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं। बात कुछ पुरानी हो गई। पौराणिकों ने एक पुस्तक में आपत्ति की कि आर्यसमाजी ईसाई, मुसलमान व दलितवर्ग को वैदिक धर्म में प्रविष्ट करके उनको आर्य बनाते हैं तो उनकी लड़कियाँ तो ले लेते हैं, अपनी लड़कियाँ उन्हें नहीं देते।

पण्डित श्री मनसारामजी वैदिक तोप ने इस आक्षेप के उत्तर में लिखा यह निराधार है। ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं कि आर्यो ने जन्म मूलक भेदभाव को हटाकर परस्पर सम्बन्ध जोड़े हैं, परन्तु यदि यह मान भी लिया जाए कि इसमें हमारी कोई कमी है तो हमारी इस कमी को पौराणिक मतावलम्बी पूरा कर देते हैं। माँगने पर इसकी लम्बी सूची दी जा सकती है। पण्डितजी का भाव स्पष्ट था कि पौराणिक जाति-पाती के कारण कितने भाई-बहिन प्रतिदिन विधर्मी बनते हैं, विधवाएँ तो विशेशरूप से।

-प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

गणतंत्र दिवस है राष्ट्र रक्षा का संकल्प दिवस

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम -हे मातृभूमे! हम तेरे गौरव की रक्षा के लिए सर्वस्व समर्पित कर दें

गणतंत्र दिवस राष्ट्र रक्षा का संकल्प दिवस है, राष्ट्रोत्थान का प्रेरणा पर्व है, राष्ट्र भक्ति का सबसे बड़ा उत्सव है। भारत राष्ट्र की उदात्त संस्कृति, सभ्यता, आचार-संहिता, भाषा, वेश, शील की सुरक्षा के प्रति देशवासियों का अखण्ड अनुराग होना ही चाहिए। जहां के नागरिक इन कसौटियों पर सही उतरते हैं, वे ही वास्तव में राष्ट्रीय कहे जा सकते हैं और जिस राष्ट्र के नागरिक किसी भी मान, पद या धन के लोभ में आकर इन्हें भुला देते हैं वे अराष्ट्रिय कहे जाते हैं। ऐसे ही नागरिकों की वृत्ति देश द्रोही कही जाती है। जिसका इस समय भारत में अधिकाधिक प्रकोप बढ़ता जा रहा है। जबकि भारत की राष्ट्रीयता का प्रचण्ड स्वरूप हमें वेदों में देखने को मिलता है। इसके भूखण्ड को केवल पृथ्वी का टुकड़ा नहीं माना गया अपितु इसे माता कहा गया है-

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

अथर्ववेद 12/1/12

भूमे मातर्निधेहि मा।

अथर्ववेद 12/1/63

गिरि, कानन, नदी, झरने उस भूमि माता के केश, शिर, नस, नाड़ी, मांस-मज्जा एवं रुधिर के तुल्य समझे गए हैं। उसी राष्ट्र में राष्ट्र के नायकों के मन में अपनी मातृभूमि के लिए बंजर भूमि आदि की भावना का होना नैतिकता के पतन की पराकाष्ठा का परिचायक है। इनमें इस भावना को जागृत करने में विदेशी कुटिल इतिहासकारों का बड़ा योगदान रहा है। जिससे प्रभावित होकर अपने को पढ़े-लिखे मानने वाले प्रगतिशील विचारक अपने देश के पूर्व महापुरुषों को अनैतिहासिक भ्रान्त एवं छली कहने में अपना गौरव अनुभव करते हैं तथा सत्य-अहिंसा का पुजारी कहलाने की लोकैषणा से ग्रस्त होकर अपने महापुरुष को अन्य राष्ट्र के महापुरुषों से हेय समझते हैं। पंचशील का ढोंग रचकर तिब्बत सहित मानसरोवर कैलाश को अन्य राष्ट्रों को देने में अपनी उदारता एवं राष्ट्रीय नागरिकों का अपमान करने में अपनी पंथ-निरपेक्षता का स्वांग रचते हुए अपने को कृतकृत्य मानते हैं। यही नहीं अब व्यापार की उदार नीति के नाम पर अतिरिक्त सुविधा-राशि लेकर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के स्वागत एवं स्वदेशी भावना को कट्टरवाद राष्ट्रघातक बताकर राष्ट्रोत्थान के मूलाधार राष्ट्रीय व्यापार का विनाश करते जा रहे हैं। वहीं इनके द्वारा पर्यटन विकास के नाम पर विदेशी नागरिकों को आमंत्रित कर उन्मुक्त यौनाचार को बढ़ावा दे रहे हैं।

भावी नागरिकों के विकास के मेरुदण्ड चरित्र को सर्वथा तोड़कर उसे प्राण हीन बनाने की विदेशियों द्वारा चलाई गई नीतियों का सगर्व पालन किया जा रहा है।

निर्वाचनों के अवसर पर राष्ट्रीय समस्याओं की उपेक्षा कर क्षेत्रीय यहां तक कि जातिगत, व्यक्तिगत, राष्ट्रघाती, क्षुद्र-स्वार्थों को उछाल जनसामान्य को दिग्भ्रमित कर चुनाव जीते जा रहे हैं। समष्टिवाद जो कि किसी भी राष्ट्र का मूलाधार होता है उसे नकार कर व्यष्टिवाद को प्रोत्साहन दिया जा रहा है वह भी अहर्निश समाजवाद का ढोल पीटने वालों के द्वारा। यही क्यों? राष्ट्रीय महापुरुषों के स्मृति चिन्हों के जीर्णोद्धार की बात को साम्प्रदायिकता मानना तथा सत्ता की अन्धी भूख के वशीभूत हो धर्मनिरपेक्षता के नाम पर किसी विशेष पन्थ, सम्प्रदाय को ही आधार बनाकर उन्हें अन्य नागरिकों से विशेष सुविधा प्रदान कर उनके लिए सर्वोच्च न्यायालय का अपमान तथा संविधान में मनमाना संशोधन एवं परिवर्तन किया जाना आदि तो अब एक साधारण बात हो गई है। विश्वभाषा के नाम पर विदेशी भाषा को प्रोत्साहन देते हुए राष्ट्रीय भाषा का तिरस्कार कर रहे हैं। अब तो सन्त महात्मा भी इस वृत्ति से अछूते नहीं रहे, अनेक सन्त नामधारी व्यक्ति स्वयं राष्ट्रघातक प्रवृत्तियों को आशीर्वाद, प्रोत्साहन देकर इस ओर उन्मुख एवं लिप्त हो रहे हैं तथा इस वृत्ति वाले लोगों को सहयोग देने के लिए राष्ट्र विरोधी नए संगठनों का निर्माण कर रहे हैं।

अब इससे छुटकारा पाने का एक मात्र मार्ग है राष्ट्रीय स्वाभिमान की प्रचण्ड ज्वाला का प्रज्जवलन और यह होगा युवा शक्ति एवं जागरूक नागरिकों के द्वारा अपने अन्दर राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा का संकल्प लेने से।

आइए! हम इस संकल्प को भारत के हर घर में पहुंचाएं, जिससे यह देशद्रोह रूपी राक्षसी जलकर भस्मसात् हो जाए तथा भारत (आर्यावर्त्त) अपने अतीत के जगद्गुरु पद पर अधिष्ठित होकर पुनः विश्व को सन्मार्ग दिखा कर सुख शान्ति एवं प्रेम का संदेश प्रदान कर सके।

पृष्ठ 2 का शेष

मिशनरीज के जाल में उलझता नेपाल

और संसदीय चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने स्पष्ट बहुमत हासिल किया। इसके बाद फिर एक नया मोड़ आया और इसके अगले ही साल यानि 1960 में राजा महेंद्र ने सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए और संसद भंग कर दी। फिर उन्होंने साल 1962 में बुनियादी लोकतंत्र के नाम पर किसी भी पार्टी के सहयोग के बिना राष्ट्रपंचायत का गठन किया। राजा ने खुद ही मंत्रिमंडल चुना। इसके बाद साल 1972 में उनकी मौत के बाद राजा बीरेंद्र को इसकी गद्दी सौंप दी गई।

किन्तु सबसे बड़ा संकट उस समय आया जब 1 जून 2001 में नेपाल के राजमहल में हुए सामूहिक हत्या कांड में राजा, रानी, राजकुमार और राजकुमारियाँ मारे गए थे। उसके बाद राजगद्दी संभाली राजा के भाई ज्ञानेंद्र बीर बिक्रम शाह ने। फरवरी 2005 में राजा ज्ञानेंद्र ने माओवादियों के हिंसक आंदोलन का दमन करने के लिए सत्ता अपने हाथों में ले ली और सरकार को बर्खास्त कर दिया। नेपाल में एक बार फिर जन आंदोलन शुरू हुआ और अंततः राजा को सत्ता जनता के हाथों में सौंपनी पड़ी और संसद को बहाल करना पड़ा संसद ने एक विधेयक पारित करके नेपाल को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया। 2007 में सांवैधानिक संशोधन करके राजतंत्र समाप्त कर दिया गया और नेपाल को संघीय गणतंत्र बना दिया। हालाँकि नेपाल की एकमात्र हिन्दू राष्ट्र की चमक जून 2001 के नारायणहिती नरसंहार के बाद खोने लगी थी। अप्रैल 2006 में लोगों की इच्छा के अनुसार राजा की शक्तियों को सीमित कर दिया गया था और साल 2007 में लागू अंतरिम संविधान ने धर्मनिरपेक्षता को मूलभूत सिद्धांत के रूप में स्थापित किया।

बस यहीं से धर्मांतरण का खुलकर खेल चल पड़ा या मिशनरीज द्वारा शिकार करना शुरू कर दिया। लेकिन इससे भी बड़ा मौका हाथ आया वर्ष 2015 इस साल आए भूकंप के बाद नेपाल दहल गया था। बस यही से वेटिकन की फौज को सबसे अच्छा मौका मिला। राहत सामग्री लेकर आये दलों में पादरी भी आये और लोगों के अन्दर डर पैदा किया उन्हें बताया कि अगर आगे भूकंप से बचना है तो जीसस की शरण में आओ। नेपाल में चगाई और धर्मांतरण का खेल इतने व्यापक पैमाने पर चला कि 2018 में धर्म परिवर्तन को लेकर कड़ा कानून अस्तित्व में आया, जिसके अनुसार, धर्म परिवर्तन के लिए उकसाने पर पांच साल की जेल हो सकती है।

किन्तु ईसाई मिशनरीज ने इस कानून को ठेंगे पर रखा और बड़ी संख्या में काम जारी रखा। इसमें कोई दो राय नही है कि भारत के कई राज्यों की तरह ही यहाँ अभी भी बड़ी संख्या में गरीब और अशिक्षित लोग हैं। देवीय चमत्कार में भरोसा करना या यह कहो अंधविश्वास आदि का प्रभाव सामाजिक जीवन को बहुत गहराई तक प्रभावित करता है। नेपाल में मिशनरियों के निशाने पर वहां की गरीब और मध्यम जातियों के लोग हैं। मिशनरियां वहां के मगर, गुरुंग, लिंबू, राई, खार्की और विश्वकर्मा जातियों को अपना टार्गेट बनाती है। पहले वह उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आदि के लिए मदद देती है और बाद में बड़ी खामोशी से ईसाई धर्म में दीक्षित कर देती है। नेपाल के बदले इस जनसांख्यकीय हालात से वहां के बुद्धिजीवियों में लचता व्याप्त है। साल 2016 में महासम्मेलन के मंच से वहां के समाज विज्ञानी रमेश गुरुंग ने कहा था कि ईसाई आबादी बढ़ने का यह सिलसिला अगर बना रहा, तो आने वाले कुछ सालों में वहां हिन्दू और बौद्ध आबादी अल्पसंख्यक होकर रह जायेगी। हालाँकि फिर से कई संगठन नेपाल को फिर से हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की मांग कर रहे है, किन्तु ऐसे में सिर्फ एक ही सवाल पैदा होता है यदि दुबारा हिन्दुत्व यहाँ कायम हुआ तो नेपाल महात्मा गांधी के हिन्दुत्व को अपनाएगा या गोडसे और वीर सावरकर के हिन्दुत्व को स्वीकार करेगा?

-संपादक

शोक समाचार

श्रीमती राम देवी बत्रा जी का निधन

आर्य समाज आदर्श नगर के पूर्व प्रधान स्व. श्री महावीर बत्रा जी की धर्मपत्नी श्रीमती राम देवी जी का निधन 14 जनवरी 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 17 जनवरी को आर्य समाज आदर्श नगर में सम्पन्न हुई जिसमें क्षेत्रीय आर्यजनों ने श्रद्धांजलि दी।

श्री रमेश भाटिया जी का निधन

आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी के सदस्य, प्रचार मीडिया कार्यो में सहयोगी तथा समाज कल्याण के कार्यों में समर्पित रहे, श्री रमेश भाटिया जी का 60 वर्ष की आयु में 15 जनवरी 2023 को अकस्मात् निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 16 जनवरी, 2023 से रविवार 22 जनवरी, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 18-19-20 जनवरी, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 18 जनवरी, 2023

प्रतिष्ठा में,

सूरीनाम के राजमहल में होगा महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती का भव्य आयोजनः श्री चंद्रिका प्रसाद संतोखी, राष्ट्रपति सूरीनाम

आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने सूरीनाम के राष्ट्रपति श्री चंद्रिका प्रसाद संतोखी जी से भेंट कर महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती पर भारत में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारने का निमंत्रण दिया तथा सूरीनाम में भी महर्षि की जयंती पर विशेष आयोजन करने का निवेदन किया। माननीय राष्ट्रपति जी ने प्रतिनिधि मण्डल के दोनो अनुरोध सहर्ष स्वीकार किए। उपरोक्त चित्र में राष्ट्रपति जी को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट करते हुए सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी एवं विनय आर्य जी

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सभा द्वारा संचालित समस्त गतिविधियों एवं सेवा प्रकल्पों का नेतृत्व एवं मार्गदर्शन करने हेतु सक्रिय, 8 जनवरी 2023 को आर्य समाज हनुमान रोड के प्रांगण में सभा एवं आर्य समाज के सम्मानित अधिकारियों के साथ बैठक के उपरांत सामूहिक चित्र में

12 फवरी 2023 के शुभारंभ समारोह को लेकर दिल्ली सभा द्वारा संचालित आर्य विद्या परिषद के समस्त अधिकारी एवं स्टाफ की बैठक संपन्न

महर्षि दयानन्द की 200 वीं जयंती के विश्व भर में होने वाले दो वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ समारोह 12 फरवरी 2023 को लेकर एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल में सभी स्कूलों के अधिकारी, प्राचार्य, अध्यापक, अध्यापिकाओं की बैठक 17 जनवरी को सम्पन्न हुई। जिसमें श्री विनय आर्य जी ने कार्यक्रम की भव्यता और सफलता के विषय में विस्तार से बताया। उपस्थित समस्त महानुभावों ने अत्यन्त उत्साह के साथ सहभागिता का भरोसा दिलाया।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ
प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	₹60	₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह